

[३४] श्री निशीथ (छेद)सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

“निशीथ” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता → मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.)

12/02/2015, गुरुवार, २०७१ महा कृष्ण ८

jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र-[३४], छेदसूत्र-[१] “निशीथ” मूलं

<p>आगम (३४)</p>	<p style="text-align: center;">“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)</p> <p style="text-align: center;">----- उद्देशः [-] ----- मूलं [-] -----</p>
<p>प्रत सूत्रांक [-]</p> <p>दीप अनुक्रम [-]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी संशोधितः संपादितश्च</p> <h1 style="margin: 0;">निशीथ सूत्र</h1> <p>मुद्रित पृष्ठरूपं - शत्रुंजयतीर्थे शीलोत्कीर्णः -सुरतनगरे ताम्रपत्रोत्कीर्ण</p> <p>“आगममंजुषा”याः उद्धृत-छेदसूत्रम्</p> <p>वीर संवत् २४६८ विक्रम संवत् १९९८ सन् १९४२</p> </div>
	<p>निशीथ-छेदसूत्रस्य “टाइटल पेज”</p>

मूलाङ्काः ५८+.....+५१

'निशीथ' छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम

दीप-अनुक्रमाः १४२०

मूलांकः	उद्देशः	पृष्ठांकः	मूलांकः	उद्देशः	पृष्ठांकः	मूलांकः	उद्देशः	पृष्ठांकः
०००१	प्रथमः	००४	००५९	द्वितीयः	००५	०११८	तृतीयः	००६
०१९७	चतुर्थः	००७	०३१४	पंचमः	००७	०३९३	षष्ठः	००८
०४७०	सप्तमः	००९	०५६१	अष्टमः	००९	०५८०	नवमः	०१०
०६०८	दशमः	०१०	०६५५	एकादशः	०११	०७४७	द्वादशः	०१२
०७८९	त्रयोदशः	०१२	०८६३	चतुर्दशः	०१३	०९०५	पंचदशः	०१३
१०५९	षोडशः	०१४	११०९	सप्तदशः	०१४	१२६०	अष्टादशः	०१५
१३३३	एकोनविंशतिः	०१५	१३७०-	विंशतिः	०१५	-----	-----	-----
			-१४२०					

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] "निशीथ" मूलं

['निशीथ' - मूलं] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

पूज्यपाद आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरीजी) के संशोधन एवं संपादन से सन १९४२ (विक्रम संवत् १९९८) में ४५ आगम+वैकल्पिक दो आगम+ पांच निर्युक्तिओ एवं कल्पसूत्र को मिलाकर “आगममंजुषा” नाम से करीब १३०० पृष्ठ छपे, जिसकी साइज़ 20x30 इंच थी | इस संपादनमें ६+१ छेदसूत्र भी पूज्यश्रीने मुद्रित करवाए | यहीं “आगममंजुषा” पूज्यश्री की प्रेरणा से श्री शत्रुंजयतीर्थ की तलेटीमें आगममंदिरमें आरस के पट्ट पर भी उत्कीर्ण हुई और सुरतनगरमे ताम्रपत्र पर भी अंकित हुई | हमने उसी ६+१ छेदसूत्रो को फोटो-स्केन करवाया, फोटो-स्केन कोपी को पहले 'A-4' साइज़ मे लेजाकर अलग-अलग ६+१ किताबो के रुपमे रखा, फिर उसी को इन्टरनेट पर भी अपलोड करवाया और हमारे प्रकाशनो कि DVD मे भी उनको स्थान दे दिया |

✦ हमारा ये प्रयास क्यों? ✦ आगम की सेवा करने के हमें तो बहुत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा आदर देखकर हमने इसी ६+१ छेदसूत्रो को प्रत-स्वरुपमें यहां सम्मिलित कर दिया, ताँकी भविष्यमे को यह न कहे कि इस संपुटमें ३९ आगम हि है, और ६ आगम कम है |

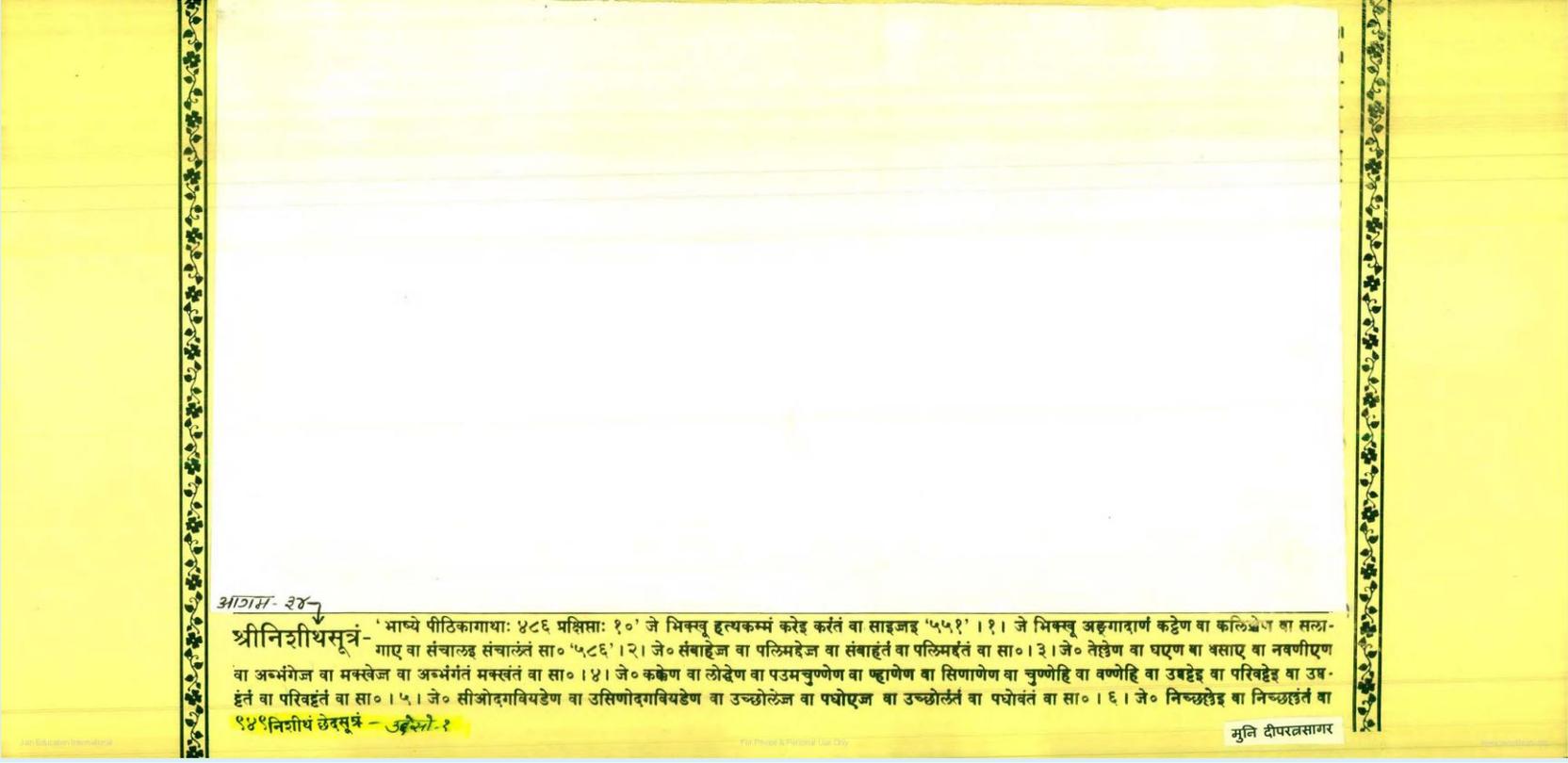
एक स्पेशियल फोरमेट बनवा कर हमने बीचमे पूज्यश्री संपादित पृष्ठो को ज्यों के त्यों रख दिए, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर अध्ययन या उद्देशक तथा मूलसूत्र या गाथाजो जहां प्राप्त है उसके क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन या उद्देशक तथा सूत्र या गाथा चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो सके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर सके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढ़ते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चाहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच सकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे विशिष्ठ फूटनोट भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे खास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है।

.....मुनि दीपरत्नसागर.....

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

आगम (३४)	“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं) ----- उद्देशः [१] ----- मूलं [१] -----
प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं</p> <div style="text-align: center;">  </div>
	अत्र उद्देशकः १ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [१] ----- मूलं [८] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[८]
दीप
अनुक्रम
[८]

सा० १७।७।जे० जिग्घइ जिग्घंतं वा सा० '५९०'।८।जे० अन्नयंसि अचित्तसि सोयंसि अणुपवेसेत्ता सुकपोमले निग्घायइ निग्घायंतं वा सा० '६०३'।९।जे० भिक्खु सचित्त-
पट्टियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा सा० '६०८'।१०।जे० भिक्खु पयमगं वा संकमं वा अवलंबणं वा '६१९'।११।जे० दगवीणियं '६२९'।१२।जे० सिक्कं वा सिक्कणंतं वा
'६४१'।१३।जे० सोत्थियं वा रज्जुयं वा चिल्लिमिणि वा '६५१'।१४।जे० सुइए।१५।पिप्पल्यगस्स।१६।नहच्छेयणगस्स।१७।कण्हसोहणगस्स उत्तरकरणं अन्नउत्थिएणं
वा गारत्थिएण वा करेइ करंतं वा सा० '६६५'।१८।जे० अण्हट्टाए सुइं।१९।पिप्पल्यं।२०।नहच्छेयणं।२१।कण्हसोहणं जायइ जायंतं वा सा० '६५८'।२२।जे० भिक्खु
अविहीए सुइं जाव जायइ जायंतं वा सा० '६६०'।२३-२६।जे० भिक्खु अप्पणो एगस्स अट्टाए सुइं जाइत्ता अन्नमन्नस्स अणुप्पदेइ अणुप्पदेतं वा सा०।२७-३०।जे० भिक्खु
पडिहारियं सुइं जाइत्ता 'वत्यं सिक्खिस्सामि'त्ति पायं सिक्खइ सिक्खंतं वा सा०।३१।पिप्पल्यं जाइत्ता 'वत्यं छिदिस्सामि'त्ति पायं छिदिइ छिदिंतं वा सा०।३२।नहच्छेयणं जाइत्ता
'नइं छिदिस्सामि'त्ति सत्तुद्धरणं करेइ करंतं वा सा०।३३।कण्हसोहणं जाइत्ता 'कण्हमलं नीहरिस्सामि'त्ति दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरइ नीहरंतं वा सा० '६६२'।३४।जे०
भिक्खु अविहीए सुइं पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा सा० '६७२'।३५-३८।जे० भिक्खु लाउपायं वा दारुपायं वा मह्ठियापायं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ वा संठ-
वेइ वा जमावेइ वा अलमप्पणो करणयाए सुट्टुमवि नो कप्पइ जायमाणे सरमाणे अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा सा० '६८६'।३९।जे० दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा
वेणुसुइयं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ सो वेव भग्गिइओ गमओ अणुगंतवो जाव (पायं तइडेति) सा० '७०८'।४०।जे० पायस्स एक्कं तुडियं तइडेइ तइडंतं
वा सा० '७१४'।४१।पायस्स परं तिण्हं तुडियाणं तइडेइ तइडंतं वा सा० '७१९'।४२।जे० पायं अविहीए बंधइ बंधंतं वा सा० '७२६'।४३।जे० पायं एरणं बंधेणं बंधइ
बंधंतं वा सा० '७३१'।४४।जे० पायं परं तिण्हं बंधाणं बंधइ बंधंतं वा सा० '७३६'।४५।जे० अहरेगबंधणं पायं दिवइदाओ मासाओ परेण घरेइ घरंतं वा सा० '७४५'।४६।
जे० वत्यस्स एगं पडियाणियं देइ देतं वा सा० '७६२'।४७।जे० वत्यस्स परं तिण्हं पडियाणियाणं देइ देतं वा सा० '७६७'।४८।जे० अविहीए वत्यं सिक्खइ सिक्खंतं वा सा०
'७७४'।४९।जे० वत्ये एगं फालियगण्ठियं करेइ करंतं वा सा० '७७७'।५०।जे० वत्ये परं तिण्हं फालियगण्ठियाणं करेइ करंतं वा सा०।५१।जे० वत्ये एगं फालियं गण्ठेइ
गण्ठंतं वा सा०।५२।जे० वत्ये परं तिण्हं फालियाणं गंठेइ गंठंतं वा सा०।५३।जे० वत्यं अविहीए गंठेइ गंठंतं वा सा० '७७८'।५४।जे० वत्यं अतजाएणं गाहेइ गाहंतं वा सा०
'७८१'।५५।जे० अहरेगगहियं वत्यं परं दिवइदाओ मासाओ घरेइ घरंतं वा सा० '७८७'।५६।जे० गिहधूमं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिसाडावेइ परिसाडेतं वा सा०
'७९३'।५७।जे० पूहकम्मं भुंजइ भुंजंतं वा साइजइ, तं सेवमाणे आवजइ भासियं परिहारट्टाणं अणुपाइयं '८०४'।५८।पढमो उदेसओ समत्तो ॥ जे भिक्खु दारुदंडं
पायपुंलणं करेइ करंतं वा सा० '१८'।१।जे० गिण्हइ गिण्हंतं वा सा०।२।घरेइ घरंतं वा सा०।३।वियरइ वियरंतं वा सा०।४।परिभाएइ परिभायंतं वा सा०।५।परिभुजइ परिभुं-
जंतं वा सा० '२१'।६।जे० परं दिवइदाओ मासाओ घरेइ घरंतं वा सा० '२८'।७।जे० विसुयावेइ विसुयावेंतं वा सा० '३६'।८।जे० भिक्खु अचित्तपट्टियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा सा०
'३८'।९।जे० पयमगं वा संकमं वा अवलंबणं वा।१०।जे० दगवीणियं।११।सिक्कं वा सिक्कणंतं वा।१२।सोत्थियं वा रज्जुयं वा (चिल्लिमिणि वा) करेइ करंतं वा सा०।१३।जे० सुइए
।१४।पिप्पल्यगस्स।१५।नहच्छेयणगस्स।१६।कण्हसोहणगस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ करंतं वा सा० '५६'।१७।जे० भिक्खु लहुस्सगं फरुसं वयइ वयंतं वा सा० '७९'।१८।जे० सुसं
वयइ वयंतं वा सा० '९०'।१९।जे० अदत्तं आइयइ आइयंतं वा सा० '९९'।२०।जे० भिक्खु लहुस्सएण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा कण्णाणि वा
अच्छीणि वा दन्ताणि वा नहाणि वा मुहं वा उच्छोलेज वा पच्छोलेज वा उच्छोलंतं वा पच्छोलंतं वा सा० '११७'।२१।जे० कसिणाइं चम्माइं घरेइ घरंतं वा सा० '१५२'।२२।कसि-
णाइं वत्थाइं '१७७'।२३।अभिजाइं वत्थाइं।२४।लाउपायं वा दारुपायं वा मह्ठियापायं वा सयमेव परिघट्टइ वा संठवेइ वा जवेइ वा परिघट्टंतं वा जाव जवेंतं वा सा० '१८०'।२५।
दंडं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा वेणुसुइयं वा।२६।जे० नियगवेसियं पडिग्गहं घरेइ घरंतं वा सा० '१९४'।२७।जे० परमवेसियं।२८।वरगवेसियं।२९।बल्लगवेसियं '२०४'।३०।
वरगवेसियं '२१०'।३१।जे० भिक्खु नियं अग्गपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा सा० '२१९'।३२।पिंडं।३३।अवइदं।३४।भागं।३५।उवइदभागं।३६।वासं वसइ वसंतं वा सा०
'२३६'।३७।जे० भिक्खु पुरेसंथवं वा पच्छासंथवं वा करेइ करंतं वा सा० '२६५'।३८।जे० समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइजमाणे पुरेसंथुइयाणि वा पच्छासंथुइयाणि वा
कुत्थाइं पुत्रामेव पच्छा वा भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '१९१'।३९।जे० भिक्खु अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सदिं गाहावइ-
९५० निशीथं छेदसूत्रं, ३४/२०-२

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः २ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [२] ----- मूलं [४०] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[४०]
दीप
अनुक्रम
[९८]

कुलं पिंडवायपडियाए अणुपविसइ वा निक्खमइ वा अणुपविसंतं वा निक्खमंतं वा सा० '३०६'।४०। जे० बहिया विहारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमइ वा पविसइ वा निक्ख-
मंतं वा पविसंतं वा सा० '३१४'।४१। जे० गामाणुगामं दुइजइ दुइजंतं वा सा० '३२२'।४२। जे० भिक्खु अन्नयरं भोयणजायं पडिग्गाहेत्ता सुब्बि सुब्बि भुज्जइ० दुब्बि दुब्बि
परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '४३१'।४३। जे० अन्नयरं पाणमजायं पडिग्गाहेत्ता पुप्फमं पुप्फमं आइयइ० कसायं कसायं परिट्ठवइ परि० सा० '३३३'।४४। जे० मणुन्नं भोयणजायं पडिग्गा-
हेत्ता बहुपरियावन्नं सिया अदूरे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुत्था अपरिहारिया संता परिवसन्ति ते अणापुच्छत्ता अनिमित्थिय परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा सा० '३४८'।४५। जे०
सागारियपिंडं गिण्हइ गिण्हंतं वा सा० '४६१'।४६। जे० भुंजइ भुजंतं वा सा० '४१५'।४७। जे० सागारियं कुलं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुब्बामेव पिंडवायपडियाए अणुपविसइ
अणुपविसंतं वा सा० '४२०'।४८। जे० सागारियनिस्साए असणं वा पाणं वा स्वाइमं वा साइमं वा ओभासिय जायइ जायंतं वा सा० '४२७'।४९। जे० उडुबदियं वा सेज्जासंधारगं
परं पज्जोसवणाओ उवाइणावेइ उवायणावेंतं वा सा० '४५७'।५०। जे० वासावासियं सेज्जासंधारगं परं दसरायकप्पाओ० '४९४'।५१। उडुबदियं वा वासावासियं वा सेज्जासंधारगं
उवरिसिज्जमाणं पेहाए न ओसारं न ओसारंतं वा सा० '५००'।५२। जे० पाडिहारियं सेज्जासंधारगं दोबं पि अणुत्तवेत्ता बाहिं नीणेइ नीणंतं वा सा० '५३३'।५३। जे० सागारियसंतियं
'५४'।५४। जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा '५१३'।५५। जे० पाडिहारियं सेज्जासंधारगं आयाए अपडिहट्टु संपबइ संपबयंतं वा सा० '५२३'।५६। जे० सागारियसंतियं
सेज्जासंधारगं आयाए अविगरणं कट्टु अणुत्तवेत्ता संपबयइ संपबयंतं वा सा० '५२७'।५७। जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंधारगं विप्पणट्टं न गवेसइ गवेसंतं
वा सा० '६००'।५८। जे० इत्तिरियं पि उवहिं न पडिलेहेइ न पडिलेहंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवजइ मासियं परिहारट्टाणं उग्घाइयं। ५९५। विदुओ उहेसओ २॥ जे भिक्खु आगं-
तागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं वा० ओभासइ ओभासंतं वा सा० '११'।१०। अन्नउत्थिया वा गारत्थिया वा० '२'।२।
अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा० '३'।३। अन्नउत्थियं वा० '४'।४। गारत्थियं वा० '५'।५। अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा कोउहलपडियाए पडियागयं समाणं असणं वा०
ओभासिय ओभासिय जायइ जायंतं वा सा०, एवं एतेणवि चत्तारि गमगा '२०'।५८। जे० अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा असणं वा० अभिहट्टं आहट्टु दिज्जमाणं
पडिसेहेत्ता तमेव अणुत्तिय २ परिवेदिय २ परिजविय २ ओभासिय २ जायइ जायंतं वा सा०, एवं एतेण चैव चत्तारि गमगा '२७'।९-१२। जे० गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए
पविट्टे पडियाइक्खित्तं समाणे दोबं तमेव कुलं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '३३'।१३। जे० संखडिप्लोयणाए असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '४५'।१४। जे० गाहा-
वइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुपविट्टे समाणे परं तिघरंतराओ असणं वा० अभिहट्टं आहट्टु दिज्जमाणं पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '५३'।१५। जे० भिक्खु अप्पणो पाए आम-
जेज्ज वा पमजेज्ज वा आमजंतं वा पमजंतं वा सा० '५७'।१६। जे० संबाहेज्ज वा पल्लिमहेज्ज वा संबाहंतं वा पल्लिमहंतं वा सा० '१७'।१७। तेउणेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिल्लिजेज्ज वा मक्खंतं वा भिल्लिमंतं वा सा० '१८'।१८। तेउणेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वहेज्ज वा उल्लोलंतं वा उव्वहंतं वा सा० '१९'।१९। सीओदगवियडेण वा उसिणो-
दगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पघोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पघोयंतं वा सा० '२०'।२०। कुमेज्ज वा रएज्ज वा कुमंतं रयंतं वा सा० '६२'।२१। जे० भिक्खु अप्पणो कायं आमजेज्ज वा पम-
जेज्ज वा आमजंतं वा पमजंतं वा सा०, एतेण अभिल्लवेण सो चैव गमो भाणियबो जाव रयंतं वा सा० '६३'।२२-२७। जे० भिक्खु अप्पणो कायस्स वणेवि ते चैव '७२'।२८-३३।
जे० भिक्खु अप्पणो कायसि गंडं वा पिल्लं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं अच्छिदेज्ज वा विच्छिदेज्ज वा अच्छिदंतं वा विच्छिदंतं वा सा० '३१'।
अच्छिदित्ता वा विच्छिदित्ता वा पुयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा गीहरंतं वा विसोहंतं वा सा० '३५'।३५। अच्छि० विच्छि० नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदगवियडेण वा उसि-
णोदगवियडेण वा पच्छोलेज्ज वा पघोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पघोवंतं वा सा० '३६'।३६। अच्छि० पघोइत्ता अन्नयरेणं आल्लेवणजाएणं आल्लिपेज्ज वा विल्लिपेज्ज वा आल्लिपंतं वा विल्लिपंतं वा
सा० '३७'।३७। अच्छि० विल्लिपित्ता तेउणेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा अम्मजेज्ज वा मक्खेज्ज वा अम्मगंतं वा मक्खंतं वा सा० '३८'।३८। अच्छि० मक्खेत्ता अन्नयरेणं धूवणजाएणं धूवेज्ज
वा धूवेज्ज वा धूवंतं वा धूववंतं वा सा० '३९'। जे० भिक्खु अप्पणो पाउकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अह्गुलिए निवेसिय निवेसिय नीहरइ नीहरंतं वा सा० '७६'।४०। जे० दीहाओ
नहसिहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कर्पंतं वा संठवंतं वा सा० '४१'।४१। दीहाई जह्गरोमाई। ४२। वरियं। ४३। चक्खुं। ४४। कक्खं। ४५। मंसुं। ४६। दन्ते आपसेज्ज वा पयसेज्ज
वा आपसंतं वा पघसंतं वा सा० '४७'। उच्छोलेज्ज वा पघोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पघोयंतं वा सा० '४८'। कुमेज्ज वा रएज्ज वा कुमंतं वा रयंतं वा सा० '४९'। उट्टे आमजेज्ज वा
९५९ निशीथं छेदसूत्रं, अक्षरं - ३

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः ३ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [३] ----- मूलं [५५] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[५५]
दीप
अनुक्रम
[१७२]

पमजेज वा, एवं ओट्टे पायगमो भाणियबो जाव फुमेज वा रएज वा ।५०-५५। जे० दीहाइ उत्तरोट्टोमाइ कपेज वा संठवेज वा कर्पंत वा संठवंत वा सा० ।५६। ०अच्छिपत्ताइ ।५७। ०अच्छीणि आमजेज वा एवं अच्छीसु पायगमो भाणियबो जाव रएज वा ।५८-६३। ०दीहाइ भुमगरोमाइ ।६४। ०पासरोमाइ कपेज वा संठवेज वा कर्पंत वा संठवंत वा सा० ।६५। ०अच्छिमलं वा कणमलं वा दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरेज वा विसोहेज वा गीहुरंत वा विसोहंत वा सा० ।६६। ०कायाओ सेयं वा जहं वा पहं वा मलं वा ।६७। जे भिक्खु गामाणुगामं बुइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० ।६८। जे० सणकप्पासओ वा उण्णक० वा पोण्डक० वा अभिलक० वा वसीकरणसोसियं करेइ करंतं वा सा० ।६९। जे० गिहसि वा गिहमुहंसि वा गिहदुवारियंसि वा गिहपडिदुवारंसि वा गिहैलुयंसि वा गिहंमणंसि वा गिहवचंसि वा उचारं वा पासवणं वा परिट्टवेइ परिट्टवंतं वा सा० ।७०। ०मडगगिहंसि वा मडगच्छारियंसि वा मडगभूमियंसि वा मडगआसयंसि वा मडगलेणंसि वा मडगयण्डलंसि वा मडगवचंसि वा ।७१। ०इङ्गालदाहंसि वा खारदाहंसि वा गायदाहंसि वा तुसदाहंसि वा ऊसदाहंसि वा ।७२। ०आययणंसि वा पंकेसि वा पणमंसि वा ।७३। नवियासु वा गोहंहुणियासु नवियासु वा मट्टियासाणीसु परिभुज्जमाणियासु वा अपरिभुज्जमाणियासु वा ।७४। ०उंबरवचंसि वा नग्गोहवचंसि वा आसत्प० वा पिल्लु० वा डाग० वा ।७५। ०इक्खुवणंसि वा साल्लिवणंसि वा कुसुमवणंसि वा कप्पासवणंसि ।७६। ०डागवचंसि वा साग० वा मूल्य० वा कोरुंवरि० वा खार० वा जीरिय० वा दमणग० वा मरु० वा ।७७। ०असोवणंसि वा सत्तिवणवणंसि वा चंपवणंसि वा न्यवणंसि वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तो-वएसु पुप्फोवएसु फलोवएसु छाओवएसु ।१०६। १०८। ०सपायंसि वा परपायंसि वा दिया वा राओ वा वियाले वा उब्बाहिज्जमाणे सपायं गहाय परपायं वा जाहत्ता उचारपासवणं परिट्ट-वेत्ता अणुग्गए सुरिये एडेइ एडंतं वा सा० ।११७। तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्टाणं उग्घाइयं ।७९। तइओ उद्देशओ ३॥ जे भिक्खु रायं अत्तीकरेइ अत्तीकरंतं वा सा०, ०अत्तीकरेइ अत्तीकरंतं वा सा० ।२८। १२-३। एवं रायारकियं ।४-६। नगरारकियं ।७-९। निगमारकियं ।१०-१२। देसारकियं ।१३-१५। सन्नारकियं ।२८। ११६-१८। ०कसिणाओ ओसहीओ आहारेइ आहारंतं वा सा० ।३७। १९। ०आयरियउवज्जाएहिं अविइवं विगइं आहारेइ आहारंतं वा सा० ।६२। १२। ०ठवण-कुलाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुब्बामेव पिण्डवायपडियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० ।१०९। १२। १। ०निग्गन्धीणं उवस्सयंसि अविहीए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० ।२२२। १२। ०निग्गन्धीणं आगमणपहंसि दण्डं वा लट्टियं वा रयहरणं वा मुहपोत्तियं वा अन्नयरं वा उवगरणजायं ठवेइ ठवंतं वा सा० ।२३३। १२। ०नवाइं अणुप्पचाइं अहि-गरणाइं उप्पाएइ उप्पायंतं वा सा० ।२५३। १२। ०पोराणाइं अहियगरणाइं खामियविउसमियाइं पुणो उदीरेइ उदीरंतं वा सा० ।२५८। १२। ०मुइविप्फालियं हसइ हसंतं वा सा० ।२६३। १२। ०पासत्थस्स संघाडयं देइ पडिच्छइ देन्तं वा पडिच्छंतं वा सा० ।२७-२८। एवं ओसन्नस्स ।२९-३०। कुसीलस्स ।३१-३२। नितियस्स ।३३-३४। संसत्तस्स ।२८३। ३५-३६। उदउडेण वा ससिण्णियेण वा हत्थेण वा द्वाीए वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ।३७। एवं एकवीसं हत्था भाणियद्वा (इशबै० ५ अ० ३२-३३-३४-३५) ससरक्खेण वा मट्टियासंसट्टेण वा उसासं० वा लोणियसं० वा हरियालसं० वा मणोसिल्लासं० वा वण्णियसं० वा गेरुयसं० वा सेडियसं० वा सोरट्टियसं० वा हिट्ठु-लगसं० वा अण्णसं० वा लोदसं० वा कुक्कुससं० वा पिट्टसं० वा कंतवसं० वा कंदमूलसं० वा सिक्खेवसं० वा पुप्फगसं० वा उक्कुट्टसं० वा हत्थेण वा० ।२८९। ३८। ०गामारकियं अत्तीकरेइ अत्तीकरेइ अत्तीकरेइ करंतं वा सा० एवं सो चैव रायगमो गेयबो ।३९-४१। ० देसारकियं ।४२-४४। ० सीमारकियं ।४५-४७। ० रण्णारकियं ।४८-५०। ० सन्नारकियं ।२९०। ५१-५३। ० अन्नमन्नस्स पाए एवं तइयउद्देशगमेण गेयबं जाव गामाणुगामं बुइज्जमाणो अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० ।२९१। ५४-१०६। ० साणुप्पाए उचारपासवणमूमिं न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा सा० ।२९५। १०७। ० तओ उचारपासवणमूमिओ न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा सा० ।२९९। १०८। ० खुइडागंसि थण्डिलंसि उचारपासवणं परिट्टवेइ परिट्टवंतं वा सा० ।३०४। १०९। ० उचारपासवणं अविहीए परिट्टवेइ परिट्टवंतं वा सा० ।३०७। ११०। ० उचारपासवणं परिट्टवेत्ता न पुच्छइ नपुच्छंतं वा सा० ।१११। ० कट्टेण वा कल्लिजेण वा अह्मणुलियाए वा सलगाए वा पुच्छइ पुच्छंतं वा सा० ।११२। ० नायमइ नायमंतं वा सा० ।११३। ० तत्थेव आयमइ आयमंतं वा सा० ।११४। ० अतिरूरे आयमइ आयमंतं वा सा० ।११५। जे भिक्खु परं तिण्हं नावापूरणं आयमइ आयमंतं वा सा० ।३१७। ११६। ० अपरिहारिए णं परिहारियं बुया-एहि अजो! तुमं च अहं च एगओ असणं वा० पडिग्गाहेत्ता तओ पच्छा पत्तेयं पत्तेयं भोक्खामो वा पाहामो वा, जो तमेवं वयइ वयंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्टाणं उग्घाइयं ।३२९। ११७। चउत्थो उद्देशओ ४॥ जे भिक्खु सच्चित्तकस्समूलंसि ठिबा आलोएज्ज वा पलोएज्ज वा आलोयंतं वा पलोयंतं वा सा० ।१। जे० सच्चित्तकस्समूले ठाणं वा सेजं वा निशीहियं वा चेएइ चयंतं वा सा० ।२। ० सच्चित्तकस्समूलंसि ठिबा असणं वा० आहारेइ आहारंतं वा सा० ।३। ० उचारपासवणं परिट्टवेइ परिट्टवंतं वा सा० ।२९। ४। ० (२३८) ९५२ निशीथं छेदसूत्रं, उद्देशो - ४०४ ५

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः ५ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [५] ----- मूलं [५] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[५]
दीप
अनुक्रम
[३१८]

सज्जायं करेह करंतं वा सा० १५१० उहिसइ उहिसंतं वा सा० १६१० समुहिसइ समुहिसंतं वा सा० १७१० अणुजाणइ अणुजाणंतं वा सा० १८१० वाएइ वायंतं वा सा० १९१० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा० ११०१० परियट्टेइ परियट्टंतं वा सा० १२१० १११० जे भिक्खु अप्पणो संपाडिं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सिन्नावेइ सिन्नावंतं वा सा० १४५१० १२१० अप्पणो संपाडीए दीहसुत्ताइ करेइ करंतं वा सा० १५०१० १३१० पिउमवपलासयं वा पडोलप० वा विहप० वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा संपाणिय संपाणिय आहारेइ आहारंतं वा सा० १५९१० ११४१० पडिहारियं पायपुच्छणयं जाइत्ता तामेव रयणिए पच्चपिणइस्सामित्ति सुए पच्चपिणइ पच्चपिणंतं वा सा० ११५१० पडिहारियं पायपुच्छणयं जाइत्ता सुए पच्चपिणइस्सामित्ति तमेव रयणिए पच्चपिणइ पच्चपिणंतं वा सा० ११६१० एवं सागारियसंतिएवि जे पायपुच्छणयं जाइत्ता दो आलावग्गा ११७-१८१० पडिहारियं बच्चयं वा लट्ठियं वा अबलेइमित्तं वा वेलुसुइ वा एवं एतेहिं दोहिं चैव पाडिहारियं सागारियं गमएहिं गेयवा ११९-२२१० पाडिहारियं सेजासंयारयं पच्चपिणत्ता दोच्चपि अणुपुच्चविय अहि-ट्टेइ अहिट्टंतं वा सा० १२१० १२३१० एवं सागारियसंतिएवि १२४१० जे पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेजासंयारयं अप्पच्चपिणत्ता अणुपुच्चविय अहिट्टेइ अहिट्टंतं वा सा० १२५१० सणकप्पासाओ वा पोण्डक० वा उण्णक० वा अमिलक० वा दीहसुत्ताइ करेइ करंतं वा सा० १२६१० १२६१० सच्चित्ताइ करेइ धरेइ परिमुंजइ करंतं वा सा० १२७-२९१० एवं चित्ताइ १३०-३२१० विचिन्ताणि वारुदण्डाणि वा वेल्दण्डाणि वा वेत्तदं० वा करेइ करंतं वा सा० एवं धरेइ धरंतं वा सा० परिमुंजइ परिमुंजंतं वा सा० १२९० १३३-३५१० जे नवगनिवेशिं गामंसि वा जाव सनिवेशिं वा अणुपविसित्ता असणं वा पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० १३६१० नवगनिवेशिं अयागरंसि वा तंवागरंसि वा तउआ० वा सीसआ० हिरण्णआ० वा सुवण्णआ० वा रयण० वा वडरआ० वा अणुपविसित्ता० १२९१० ३७१० जे मुहवीणियं करेइ करंतं वा सा० १३८१० इन्तवी० १३९१० एवं उट्टवी० १४०१० नासावी० १४११० कक्खवी० १४२१० हत्थवी० १४३१० नहवी० १४४१० पत्तवी० १४५१० पुक्खवी० १४६१० फलवी० १४७१० वीयवी० १४८१० हरियवी० १४९१० मुहवीणियं जाव हरियवी० वाएइ वायंतं वा सा० अण-तराणि वा तहापगाराइ अणुदिक्काइ सहाइ उदीरेइ उदीरंतं वा सा० १३२१० १५०-६११० उदेसियं सेजं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० १६२१० सपाहुडियं १६३१० सपरिकम्मं १६४१० जे नत्थि संभोगवत्तिया किरियं ति वयइ वयंतं वा सा० १७५१० १६५१० वत्थं वा पडिग्गाहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा अलं थिरं धुवं धरणिजं पलिच्छिदिय पलिच्छिदिय परिट्ट-वेइ परिट्टवंतं वा सा० १६६१० लाउयपायं वा दारुपायं वा मट्ठियापा० वा १६७१० दण्डगं वा जाव पिप्पलसुइगं वा पलिभजिय परिट्टवेइ परिट्टवंतं वा सा० १२८१० १६८१० अहरे-गपमाणं रयहरणसीसाइ धरेइ धरंतं वा सा० १६९१० सुहुमाइ रयहरणसीसाइ करेइ करंतं वा सा० १७०१० रयहरणस्स एक्कं बंधं देइ देंतं वा सा० १७११० रयहरणस्स परं तिण्हं बंधाणं देइ देंतं वा सा० १७२१० जे रयहरणं अविहीए बंधइ बंधंतं वा सा० १७३१० कण्डुसगबंधेण बंधइ बंधंतं वा सा० १७४१० वोसट्टं धरेइ धरंतं वा सा० १७५१० अनिसट्टं धरेइ धरंतं वा सा० १७६१० अभिक्खणं अभिक्खणं अहिट्टेइ अहिट्टंतं वा सा० १७७१० उस्सीसमूले ठवइ ठवंतं वा सा० १७८१० तुड्डेइ तुड्डंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवजइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं १३११० १७९१० पज्जमो उदेसो ५॥ जे भिक्खु माउग्गामं मेहुणवडियाए विन्नेवेइ वा विण्णवंतं वा सा० १५११० १११० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हत्थकम्मं करेइ करंतं वा सा० १२१० अंगादाणं कट्टेण वा कल्लिणेण वा अंगुलियाए वा संचालेइ संचालंतं वा सा०, एवं माउग्गामसिंभलावेण पढमुहेसाइगमो गेयवो जाव सोयसुयं, जे माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुपविसित्ता सुक्कपोग्गले निग्घाएइ निग्घायंतं वा सा० १३१० १०१० जे माउग्गामं मेहुणवडियाए सयं कुज्जा सयं ब्रूया करंतं वा सा० ११११० जे माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कलहं कुज्जा कलहं ब्रूया कलहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा० ११२१० लेहं लिहइ लेहं लिहावेइ लेहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा० १६९१० ११३१० पिट्टंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएइ उप्पायंतं वा सा० ११४१० पिट्टंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज्ज वा ११५१० पिट्टंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएत्ता तेडेण वा एवं जहा तइए उदेसए गंडादीण जो गमो सो चैव इहपि गेयवो जाव अण्णयरें आले-वणजाएणं आलिपेज्ज वा विलिपेज्ज वा आलिपंतं वा विलिपंतं वा सा० ११६१० एवं जाव धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा ११७-१८१० कसिणाइ वत्थाइ धरेइ धरंतं वा सा० ११९१० एवं अहयाइ २०१० धोवमलिणाइ १२११० चित्ताइ १२२१० विचिन्ताइ १२३१० अप्पणो पाए आमजेज्ज वा पमजेज्ज वा आमजंतं वा पमजंतं वा सा० एवं तइयउदेसे जो गमओ सो चैव इह मेहुणवडियाए गेयवो जाव जे माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० १२४-७६१० स्तीरं वा दहिं वा नवणीयं वा गुलं वा खण्डं वा सक्करं वा मच्छण्डियं वा अन्नयरं वा पणीयं आहारं आहारेइ आहारंतं वा साइज्जइ १८१० तं सेवमाणे आवजइ चाउग्गामसियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं १७७१० छट्ठो उदेसओ ६॥ १५३ निशीथं छेदसूत्रं, उदेसो - ६

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः ६ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [७] ----- मूलं [१] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[४७०]

जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तणमालियं वा मुज्ज० वा भेण्ड० वा मयण० वा पिण्ड० वा दन्त० वा सिंग० वा संख० वा हड्ड० वा कट्ट० वा पत्त० वा पुप्फ० वा फल० वा वीय० वा हरियमालियं वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० पिण्डिइ पिण्डियंतं वा सा० ११-३१० अयलोहाणि वा तंब० वा तउय० वा सीसग० वा रूप्पग० वा सुवण्णलोहाणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिभुज्जइ परिभुज्जंतं वा सा० १४-६१० हाराणि वा अदहाराणि वा एगवलिं वा मुत्तावलिं वा कण्णवलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडि-याणि वा केउराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा भउडाणि वा पलंबमुत्ताणि सुवण्णमुत्ताणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिभुज्जइ परिभुज्जंतं वा सा० १७-९१० आइणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपा० कोयरा(वा)णि वा कोयर(व)पा० वा कालमियाणि वा नीलमि० सामाणि वा महासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवड्ढाणि वा सहिणाणि वा सहिणकछाणाणि वा खोमाणि वा दुगुळाणि वा पट्टाणि वा आवत्ताणि वा वीणाणि वा अंसुयाणि वा कण्णकन्ताणि वा कण्णखसि(खइ)याणि वा कण्णचित्ताणि वा कण्णविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेइ जाव परिभुज्जइ परिभुज्जंतं वा सा० ११०-१२१० जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अक्खंसि वा ऊरंसि वा उयरंसि वा धणंसि वा गहाय संचालइ संचालंतं वा सा० १३१० जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नमन्नस्स पाए आमजेज्ज वा पमजेज्ज वा आमजंतं वा पमजंतं वा सा०, एवं ततियउ-हेसगमओ णेयवो जाव जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दुइज्जमाणे अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० १४-६६१० जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अणंतरहियाए एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए मट्ठियाकडाए चित्तमन्ताए पुढवीए निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्जं वा सा० १६७-७१० चित्तमन्ताए सिलाए लेल्लए० ७२-७३० कोलावासंसि वा दाकए जीवपइट्टिए सअण्डे सपाणे सबीए सहुरिए सओस्से सउदए सउत्तिङ्गपण्णदग्गमट्ठियमकडगसंताणगंसि० १७४१० आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा ० ७५१० आगन्तागारेसु वा जाव परियावसहेसु वा निसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा० अणुघासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा अणुघासंतं वा अणुपायंतं वा सा० १७६१० अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा जाव साइज्जइ १७७१० जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा० अणुघासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा अणुघासंतं वा अणुपायंतं वा सा० १७८१० जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरं तेइच्छं आउट्टेइ आउट्टंतं वा सा० १७९१० अमणुन्नाइ पोग्गलाइ नीहरइ नीहरंतं वा सा० १८०१० मणुन्नाइ पोग्गलाइ उवहरइ उवहरंतं वा सा० १८११० जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरं पसुजाइ वा पक्खिजाइ वा पायंसि वा पक्खंसि वा पुच्छंसि वा सीसंसि वा गहाय संचालइ संचालंतं वा सा० १८२१० सोयंसि कड्डं वा किलिचं वा अंगुलीयं वा सलगं वा अणुप्पवेसेत्ता संचालइ संचालंतं वा सा० १८३१० 'अयं थि'तिकट्टु आलिङ्गेज्ज वा परिस्सएज्ज वा परिचुंबेज्ज वा आलिंगंतं वा परिस्सयंतं वा परिचुंबंतं वा सा० १८४१० जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा० देइ देन्तं वा सा० १८५-८६१० एवं वर्यपि दोहिं गमएहिं १८७-८८१० सज्जायंपि दोहिं १८९-९०१० अन्नपरेणं इदिएणं आगारं करेइ करंतं वा सा० '५३' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहार-ट्टाणं अणुप्पाइयं १९१॥ सत्तमो उदेसओ ७॥ जे भिक्खु आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेतं वा साइज्जइ '८४' १११० उज्जाणंसि वा उज्जाण-गिहंसि वा उज्जाणसालंसि वा निज्जाणंसि वा निज्जाणगिहंसि वा निज्जाणसालंसि वा ० १२१० अट्ठंसि वा अट्ठालयंसि वा पागारंसि वा चरियंसि वा दारंसि वा गोपुरंसि वा एगो० १३१० दगंसि वा दग्गमगंसि वा दग्गपहंसि वा दग्गतीरंसि वा दग्गठारंसि वा एगो० १४१० सुन्नगिहंसि वा सुन्नसालंसि वा भिन्नगिहंसि वा भिन्नसालंसि वा कूडागारंसि वा कोट्टागारंसि वा एगो० १५१० तणगिहंसि वा तणसालंसि वा तुसगिहंसि वा तुससालंसि वा बुसगिहंसि वा बुससालंसि वा एगो० १६१० जाणसालंसि वा जालगिहंसि वा जुग्गसालंसि वा जुग्गगिहंसि वा एगो० १७१० पणियसालंसि वा पणियगिहंसि वा परियायगिहंसि वा परियायसालंसि वा कुवियगिहंसि वा कुवियसालंसि वा एगो० १८१० गोनसालंसि वा गोनगिहंसि वा महाकु-लंसि वा महागिहंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ सज्जायं वा करेइ असणं वा० आहारिइ उचारं वा पासवणं वा परिट्टवेइ अण्णयरं वा अणारियं निट्ठुरं अस्समणपाओग्गं कहेइ कहेइ कहेतं वा सा० '८७' १९१० राओ वा वियाळे वा इत्थीमज्झगए इत्थीसंसत्ते इत्थीपरिवुडे अपरिमाणए कहेइ कहेइ कहेतं वा सा० १९१० सगणिधियाए वा परगणिधि-याए वा निग्गन्धीए सद्धिं गामाणुगामं दुइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्टओ शीयमाणे ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्टे करतलपल्हत्थ्यमुहे अट्टज्जाणोवगए विहारं करेइ जाव करंतं वा सा० १९१० नायगं वा अनायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अन्तो उवस्सयस्स अदं वा राइं कसियं वा राइं संवसावेइ संवसावंतं वा सा० १९२१० जे० तं न पडियाइक्खइ नपडियाइक्खंतं वा सा० १९३१० जो तं पडुच्च निक्खमइ वा पविसइ वा० '१३६' १४१० जे भिक्खु रत्तो खसियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं समवाएसु वा पिण्डमहेसु वा असणं ९५४ निशीथं छेदसूत्रं उद्देशः ७

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः ८ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [८] ----- मूलं [१५] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[१५]
दीप
अनुक्रम
[५७६]

वा० पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सा० १५।० उत्तरसालसि वा उत्तरगिहंसि वा रीयमाणानं०। १६।० ह्यसालगयाण वा गयासा० वा मंतसा० वा गुज्जसा० वा रहस्सा० वा मेहुणसा० वा०। १७।० संनिहिसंनिचयाओ खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा सप्पि वा गुलं वा खण्डं वा सकरं वा मच्छण्डियं वा अन्नयरं वा भोयणजायं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सा० १८।० उस्सट्ठपिण्डं वा संसट्ठपिण्डं वा अनाहपिण्डं वा किविणपिण्डं वा वणीमगपिण्डं वा पडिग्गाहेइ जाव साइजइ '१५५' तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारट्ठानं अणुग्गाइयं। १९॥ अट्टमो उद्देशओ ८॥ जे भिक्खु रायपिण्डं गेण्हइ गेण्हंतं वा सा० ११० भुंजइ भुंजंतं वा सा० '१६'। २।० रायन्तेपुरं पविसइ पविसंतं वा सा० २।३।० रायन्तेपुरं रियं वएजा 'आउसो! रायंतेउरिए! नो खलु अम्हं कप्पइ रायन्तेपुरं निक्खमिच्चए वा पविसिच्चए वा पविसिच्चए वा आउसन्तो! समणा नो खलु तुज्जं कप्पइ रायन्तेपुरं निक्खमिच्चए वा पविसिच्चए वा आहारेयं पडिग्गाहं जाए अहं रायन्तेपुराओ असणं वा० गीहडियं आहट्टु दलयामि' जे एवं पडिगुणेइ पडिगुणंतं वा सा० '२९'। ५। जे भिक्खु रत्तो जाव मुद्दाभिसित्ताणं दुवारियमत्तं वा पसुभत्तं वा भयगमत्तं वा बलभत्तं वा कयगमत्तं वा हयभत्तं वा गयभत्तं वा कन्तारभत्तं वा दुब्भिमक्खभत्तं वा दुकालभत्तं वा दमगमत्तं वा गिलाणभत्तं वा वहलियाभत्तं वा पाहुणगमत्तं वा पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा सा० '३६'। ६। जे भिक्खु रण्णो खत्तियाण जाव मुद्दाभिसित्ताणं इमाइं छदोसाययाणाइं अजाणित्ता अपुच्छिय अगवेसिय परं चउरायपञ्चरायाओ पिण्डवायपडियाए निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमन्तं वा पविसन्तं वा साइजइ तं० कोट्टागारसालाणि वा भण्डागारसालाणि वा पाणसालाणि वा खीरसा० वा गज्जसा० वा महाणसा० वा० '४२'। ७। जे भिक्खु रण्णो जाव मुद्दाभिसित्ताणं अइग्गच्छमाणान वा निग्गच्छमाणान वा० '४८'। ८। इत्थीओ सत्तालंकारविभूसियाओ पदमवि चक्खुदंसणपडियाए गच्छइ वा अभिसंपारेइ वा गच्छन्तं वा अभिसंपारेन्तं वा सा० १९।० मंससायाण वा मच्छत्वा० वा छविखा० बहिया निग्गयाणं असणं वा जाव साइजइ। १०।० अन्नयरं उववुहणीयं समीहियं पेहाए तीसे परिसाए अणुट्टियाए अभिच्चाए अबोच्छिच्चाए जे तं अन्नं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइजइ, अह पुण एवं जाणेजा 'इहउज्ज राया खत्तिए परिवुसिए' जे भिक्खु ताए गिहाए ताए पएसाए ताए उवासन्तराए वा विहारं वा करेइ सज्जायं वा जाव कहंतं वा सा० '६१'। ११। जे भिक्खु रण्णो खत्तियाणं जाव अभिसित्ताणं बहियाजत्तासंठियाणं असणं वा० पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा सा० १२। बहियाजत्तापडिणियत्ताणं०। १३। एवं नईजत्तापडियाणं०। १४।० पडिणियत्ताणं०। १५।० गिरिजत्तापडियाणं०। १६।० गिरिजत्तापडियाणं०। १७।० महाभिसेयंसि वट्टमाणंसि निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा सा० '९०'। १८। जे भिक्खु जाव अभिसित्ताणं इमाओ दस आभिसेक्काओ रायहाणीओ उदिट्ठाओ गणियाओ वज्जियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमन्तं वा पविसन्तं वा साइजइ तंजहा-चप्पा महुहा वाणा-रसी सावत्थी साएयं कंफिळं कोसंबी मिहिला हत्थियाणपुरं रायगिहं '१००'। १९। जे भिक्खु रत्तो असणं वा० परस्स नीहडं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइजइ तं० खत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायसंसियाण वा रायपेसियाण वा० २०।० नडाण वा नट्टाण वा कच्छुयाण वा जल्लाण वा मल्लाण वा मुट्टियाण वा बेलम्बगाण वा कहूगाण वा पवगाण वा लासगाण वा दोक्खलयाण वा छत्ताणयाण वा० २१।० आसपोसयाण वा हत्थियो० वा महिसपो० वा वसहपो० वा सीहपो० वा वग्घपो० वा अयपो० वा पोयपो० वा मिगपो० वा सुणहपो० वा सुयरपो० वा मेण्डपो० वा कुक्कुडपो० वा तिसिरपो० वा वट्टयपो० वा लावयपो० वा चीरलपो० वा हंसपो० वा मयूरपो० वा सुयपो० वा०। २२। एवं आसदमगाण वा हत्थिद० वा० २३।० आसमिंठाण वा हत्थिमि० वा० २४।० आसरोहाण वा हत्थिरो० वा० २५।० सत्याहाण वा संवाहावयाण वा अम्भंगावयाण वा उव्वट्टावयाण वा मजावयाण वा मण्डावयाण वा छत्तग्गाहाण वा चामर० वा हडप्प० वा परियट्ट० वा दीविय० असि० वा धणु० वा सत्ति० कोन्त० वा० २६।० वरिसघराण वा कच्छुइज्जाण वा दोवारियाण वा दण्डारक्खियाण वा० २७।० खुज्जाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा बडमीण वा बन्वरीण वा पउसीण वा जोणियाण वा पल्हवियाण वा इत्थिणीण वा थारुणिणीण वा लउसीण वा लासीण वा सिंहलीण वा आलवी(रबी)ण वा पुलिन्दीण वा सबरीण वा पारिसीण वा० तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारट्ठानं अणुग्गाइयं '१११'। २८॥ तवमो उद्देशओ ९॥ जे भिक्खु भदन्तं आगाढं वयइ वयंतं वा सा० ११।० फरुसं। २।० आगाढफरुसं '३५'। ३।० अन्नयरीए अचासायाणाए अचासाएइ अचासायंतं वा सा० '५२'। ४। जे भिक्खु अणन्तकायसंजुत्तं आहारं आहारेइ आहारंतं वा सा० '५६'। ५।० आहाकम्मं भुज्जइ भुज्जंतं वा सा० '८१'। ६।० पट्टुप्पन्नं वागरेइ वागरेतं वा सा० १७।० अणागयं निमित्तं वागरेइ वागरेतं वा सा० '९३'। ८।० सेहं विपरिणामेइ विपरिणामतं वा सा० १९।० अवहरइ अवहरंतं वा सा० ११।० विसं विपरिणामेइ विपरिणामतं वा सा० ११।० अवहरइ अवहरंतं वा १५५ निशीथं छेदसूत्रं - उद्देशो - १०

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः १० आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [११] ----- मूलं [१२] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[१२]

दीप
अनुक्रम
[७४६]

जलपक्वदण्डाणि वा जलण० वा विसभक्वणाणि वा सन्धोवाडणाणि वा अंतोसल्लमरणाणि वा वेहाणसाणि वा गिद्वपट्टाणि वा वलयमरणाणि वा जाव अन्नयराणि वा तहृपगाराणि
बालमरणाणि पसंसइ पसंसंतं वा सा० '५३७' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्टाणं अणुग्घाइयं । १२ ॥ एकारसमो उद्देशो ११ ॥ जे भिक्खु कोलुणपडियाए अन्नयरीं
तसपाणजाई तणपासएण वा मुंजपा० वा कट्टपा० वा चम्मपा० वा वत्तपा० वा रज्जुपा० वा सुत्तपा० वा बंधइ बंधंतं वा सा० । ११० बद्धेद्वगं वा मुयइ मुयंतं वा सा० '१०' । २१०
अभिकत्तणं अभिकत्तणं पक्वत्तणं भज्जइ भंजंतं वा सा० '१५' । ३१० परिक्कायसंजुत्तं आहारेइ आहारंतं वा सा० '२०' । ४१० सलोमाई चम्माई धरेइ धरंतं वा सा० '४५' । ५१०
तणपीढगं वा पलालपी० वा छगणपी० वा कट्टपी० वा परवत्थेणोच्छन्नं अहिद्वेइ अहिद्वंतं वा सा० '५०' । ६१० निग्गन्धीए संघाडिं अन्नउत्थिएण गारत्थिएण वा सिक्खावेइ सिक्खावंतं
वा सा० '५७' । ७१० पुढवीकायस्स वा कलमायमवि समारभइ समारभंतं वा सा० एवं जाव वणप्फत्तिकायस्स '६१' । ८१० सच्चित्तकस्सं दुक्खइ दुक्खंतं वा सा० '६६' । ९१०
गिह्मिन्ते भुज्जइ भुंजंतं वा सा० । १०१० गिह्मिन्ते परिहेइ परिहेंतं वा सा० । १११० गिह्मिन्तेसं वाहेइ वाहेंतं वा सा० । १२१० गिह्मिन्तेसं करेइ करंतं वा सा० '८२' । १३१०
पुरक्कम्मकडेण हत्थेण वा मत्तेण वा द्धिएण वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० । १४१० अन्नउत्थियाण वा गारत्थियाण वा सीओदगपरिभोएण० '१४२'
। १५१० कट्टक्कमाणि वा चित्तक० वा पोत्थक० वा दन्तक० वा मणिक० वा सेलक० वा गंठिमाणि वा वेडिमाणि वा पूरिमाणि वा संघाइमाणि वा पत्तच्छेजाणि वा विविहाणि वा वेहि-
माणि वा चक्खुदंसणवडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा सा० । १६१० वप्पाणि वा कल्लिहाणि वा उप्फलाणि वा पडलाणि वा उज्जराणि वा निज्जराणि वा वावीणि वा पोक्ख-
राणि वा दीहियाणि वा गुंजालियाणि वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपं० वा० । १७० कच्छाणि वा गहणाणि वा नूमाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा पन्नयाणि वा पन्नयवि० वा०
। १८१० गामाणि वा नगराणि वा खेडाणि वा कम्बडाणि वा मट्ठवाणि वा दोणमुहाणि वा पट्टणाणि वा आगराणि वा सम्भाहाणि वा संनिवेसाणि वा० । १९१० गाममहाणि वा जाव संनिवे-
समहाणि वा० । २०१० गामवहाणि वा जाव संनिवेसवहाणि वा गामदाहाणि वा जाव संनिवेसदाहाणि वा० । २११० गामपहाणि वा जाव संनिवेसपहाणि वा० । २२१० आसकरणाणि वा हत्थिक०
वा उट्टक० वा गोणक० वा महिसक० वा सुयरक० वा० । २३१० आसजुदाणि वा हत्थिजु० वा उट्टजु० वा गोण० महिसजु० वा० । २४१० उज्जुहियट्टाणाणि वा हयजुहियट्टाणाणि वा गय-
जुहियट्टाणाणि वा० । २५१० अभिसेयट्टाणाणि वा अक्खाइयट्टाणाणि वा माणुम्माणियट्टा० वा महयाहयनट्टगीयवाइयतन्तीतलताल्लुडियपडुप्पवाइय० वा० । २६१० आघा-
यणाणि वा डिम्बाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुदाणि वा महासंगामाणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा० । २७१० विरुवरुवेसु महस्सवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि
वा थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अणलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा गायन्ताणि वा वायन्ताणि वा नच्चन्ताणि वा हसन्ताणि वा रमन्ताणि वा मोहन्ताणि वा विउलं असणं
वा० परिभायन्ताणि वा परिभुंजन्ताणि वा० सा० । २८१० इह्लोइएसु वा रूवेसुं परलोइएसु वा रूवेसुं दिट्ठेसु वा अदिट्ठेसु वा सुएसु वा असुएसु वा विन्नाएसु वा अविन्नाएसु वा रूवेसु
सज्जइ रज्जइ गिज्जइ अज्जोववज्जइ सज्जमाणं वा जाव अज्जोववज्जमाणं वा सा० '१६३' । २९१० पदमाए पोरिसीए असणं वा० पडिगाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेइ उवाइ-
णावंतं वा सा० '१८९' । ३०१० परं अद्वजोयणभेराओ असणं वा० उवाइणावेइ उवायणावंतं वा सा० '२१८' । ३११० दिया गोमयं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं आल्लिपेज्ज वा
विल्लिपेज्ज वा आल्लिपंतं वा विल्लिपंतं वा सा० । ३२१० दिया गो० प० रत्ति वणं आल्लि० विल्लिपेज्ज वा । ३३१० रत्ति गो० प० दिया वणं आ० वि० । ३४१० रत्ति गो० प० रत्ति वणं आ० वि० । ३५१०
दिया आल्लेवणजायं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं जाव चउभंगो '२२६' । ३६-३९१० अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उवहिं वहावेइ वहावंतं वा सा० । ४०१० तंनीसाए असणं
वा० देइ देंतं वा सा० '२३०' । ४११० जे भिक्खु पन्नमाओ महण्णवाओ महानईओ उडिटाओ गणियाओ वज्जियाओ अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा निकखुत्तो वा उत्तरइ वा संतरइ
वा उत्तरन्तं वा संतरन्तं वा साइज्जइ, नंजहा-गंगा जउणा सरउ, एरावई मही '२७८' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्टाणं उग्घाइयं । ४२ ॥ बारसमो उद्देशो १२ ॥
जे भिक्खु अणन्नरहियाए पुढवीए टाणं वा सेज्जं वा गिसीहियं वा चेइ चैयंतं वा सा० जाव मकडासंताणगंसि । १-८१० थूणसि वा गिहेलुयंसि वा उमुयालंसि वा कामजागंसि
वा० । ९१० कुत्थिसि वा भित्तिसि वा सिलंसि वा लेलुयंसि वा अन्नत्तिल्लज्जयंसि वा० । १०१० खंचंसि वा फल्लसि वा मज्झंसि वा मण्डवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा दुम्बदे
दुण्णिक्खित्ते अनिकम्पे चत्ताचत्ते० '२२' । १११० जे भिक्खु अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा सिपं वा सिलोमं वा अट्टापयं वा ककटयं वा तुग्गहं वा सत्थाहं (गं) वा सत्थाहकदहत्थयं
वा सिक्खावेइ सिक्खावंतं वा सा० । १२१० आगाहं वयइ वयंतं वा सा०, फरुसं, आगाहफरुसं, अन्नयरीए अबासायणाए अबासाएइ अबा० सा० '३१' । १३-१६१० जे भिक्खु अन्न-
१५७ निशीथं छेदसूत्रं, उद्देशो- १३

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः १३ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [१३] ----- मूलं [१७] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[१७]
दीप
अनुक्रम
[८०५]

उत्थियाण वा गारत्थियाण वा कोउगकम्मं करेइ करंतं वा सा० १०१० भूइकम्मं ० १०१० पसिणं कहेइ ० १०१० पसिणापसिणं ० १०२० वीयं निमित्तं ० १०२० लक्खणं ० १०२० सुमिणं ० १०२३
० विजं पउंजइ पउंजंतं वा सा० ५० १२४ ० एवं मन्तं १२५ ० जोगं १२६ ० नट्टाणं मुट्ठाणं विपरियासियाणं मग्गं वा पवेइ संधि वा प० मग्गिण वा संधि प० संधीओ वा मग्गं प०
पवेइंतं वा सा० १२५ ० घाउं पवेइइ पवेइंतं वा सा० १२६ ० निहिं ० ६२ १२९ ॥ जे भिक्खू मत्तए अप्पाणं देहइ देहंतं वा सा० १३० ० अहाए ० ३१ ॥ एवं असीए ॥ ३२ ॥ मणिए
३३ ॥ उट्टडपाणे ३३ ॥ तेहे ३५ ॥ फा(पा)णिए ३६ ॥ वसाए ० ३३ ॥ ३३ ० वमणं पडिक्कम्मं करेइ करंतं वा सा० ३३० ० विरेयणं ० ३३० ० वमणविरेयणं ० ३३० ० अरोगियं ० ८४ ॥ ४१ ॥
० पासत्थं वंदइ वंदंतं वा सा० पसंसइ पसंसंतं वा सा ० ११९ ॥ ४२-४३ ॥ एवं ओसत्तं ४४-४५ ॥ कुसीलं ४६-४७ ॥ नितियं ४८-४९ ॥ संसत्तं ५०-५१ ॥ काहियं ५२-५३ ॥ पाससियं
५४-५५ ॥ मामगं ५६-५७ ॥ संपसारगं ११९ ॥ ५८-५९ ॥ ० चाइपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा सा० ६० ॥ ६० ॥ एवं वुइ ० ६१ ॥ निमित्तं ० ६२ ॥ आजीवियं ० ६३ ॥ वणीमगपि ० ६४ ॥
तिगिच्छा ० ६५ ॥ कोह ० ६६ ॥ माण ० ६७ ॥ माया ० ६८ ॥ लोम ० ६९ ॥ विजा ० ७० ॥ मन्त ० ७१ ॥ जोग ० ७२ ॥ चुण ० ७३ ० अन्तद्वाण ० २१६ ॥ तं सेवमाणे आव-
जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उप्पाइयं ॥ ७४ ॥ तेरसमो उदेसओ १३ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं किणइ किणावेइ कीयं आहट्ट देज्जमाणं पडिग्गहइ पडि ० सा ० ११० ॥ पामिच्चइ पामि-
चावेइ पामिच्चियं ० १२० ॥ परियट्टेइ परियट्टावेइ परियट्टियं ० ३३० ० अच्छेज्जं अनिसिट्टं अभिहट्टं ० ५१ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू अइरेणं पडिग्गहं गणि उदिसिय गणि समुदिसिय तं गणि अणापु-
च्छिय अणामनितय अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा सा ० ५१ ० खुट्टडगस्स वा खुट्टिडयाए वा थेगस्स वा थेरियाए वा अहत्थच्छिन्नस्स अपायच्छिन्नस्स अनासच्छिन्नस्स अकण-
च्छिन्नस्स अणोच्छिन्नस्स सक्कस्स देइ देंतं वा सा ० ६० ० खुट्टडगस्स वा जाव थेरियाए वा हत्थच्छिन्नस्स ओट्टच्छिन्नस्स असक्कस्स न देइ नदेंतं वा सा ० १५३ ॥ ७१ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं
अणलं अथिरं अपुवं अधारणिज्जं धरेइ धरंतं वा सा ० ८० ० अलं थिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ नधरंतं वा सा ० १५९ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू वणमन्तं पडिग्गहं विवणं करेइ करंतं वा सा ०
११० ॥ विवणं पडिग्गहं वणमन्तं ० ११ ॥ जे भिक्खू 'नो नवए मे पडिग्गहे ल्हे' त्तिकट्टु तेहेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज वा भिल्लिगेज वा मक्खंतं वा भिल्लिगंतं वा सा ०
१२० ० लोद्रेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उड्डोलेज वा उड्डले(हे)ज वा उड्डोलंतं वा उड्डलं(हे)तं वा सा ० १३१ ० सीओदगवियडेण वा जाव उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज
वा पधोएज वा ० १४० ० बहुदेवसिएण तेहेण वा ० लोद्रेण वा ० सीओदगवियडेण जाव सा ० १५-१७ ॥ जे णवए मे पडिग्गहे इतिकट्टु एवं दो गमा भाणियत्ता ॥ जे ० सुत्थिभंगे पडिग्गहे
ल्हे इतिकट्टु ० बहुदेवसिएण सीओदगवियडेण वा जाव सा ० १८-२३ ॥ जे नो नवए सुत्थिभंगेण वि दो चेव गमा ॥ जे तुत्थिभंगे पडिग्गहे ल्हेत्ति ० तुत्थिभंगेण दो चेव गमा गेयत्ता ० १७
१२४-२९ ॥ जे भिक्खू अणन्तरहियाए पुट्टवीए जाव जीवपतिट्टित्ते सअंहे जाव ससंक्रमणसि चलाचले सपडिग्गहं आयावेज वा पयावेज वा आया ० पयावंतं वा सा ० ३३० ० ४० ॥ एवं जे ०
कुलियंसि वा जाव लेल्लुयंसि वा सपडिग्गहं आया ० पया ० साइ ० ४१ ॥ जे ० खंधंसि जाव पासायंसि वा अन्नयरंसि वा अंतरिक्खजायंसि सपडि ० १७९ ॥ ४२ ० पडिग्गहाओ पुट्टवीकायं
आउकायं तेउकायं नीहरइ नीहरावेइ नीहरियं आहट्ट देज्जमाणं पडिग्गहइ पडिग्गहंतं वा सा ० ४३ ० कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा ० ४४ ०
ओसहिबीयाइ ० ४५ ० तसपाणजायं ० १९५ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं गिक्कोरेइ गिक्कोरेइ गिक्कोरियं आहट्ट देज्जमाणं पडिग्गहइ पडिग्गहंतं वा सा ० २०० ॥ ४७ ॥ जे
भिक्खू नायगं वा अनायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामन्तरंसि वा गामपहन्तरंसि वा पडिग्गहं ओभासिय २ जायइ जायंतं वा सा ० ४८ ० अणुवासगं वा परिसामज्जाओ उट्टवेत्ता ०
२१३ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहगनीसाए उडुवहं वसइ वसंतं वा सा ० ५० ० वासावासं ० २१७ ॥ तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उप्पाइयं ॥ ५१ ॥ चउहसमो
उदेसओ १४ ॥ जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं वयइ वयंतं वा सा ० १ ॥ एवं फरुसं ० २ ॥ आगाढफरुसं ० ३ ० अजयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ ० २ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अम्भं
भुज्जइ भुंजंतं वा सा ० ५१ ० विडसइ विडसंतं वा सा ० ६० ० सचित्तं अम्भं वा अम्भपंसि वा अम्भभित्तं वा अम्भसालगं वा अम्भडालगं वा अम्भचोयगं वा भुज्जइ भुंजंतं वा सा ० ७१ ०
विडसइ विडसंतं वा सा ० ८१ ० सचित्तपडिट्टियं अम्भं भुज्जइ ०, एवं सचित्तपट्टिएण वि चत्तारि आलावगा गेयत्ता ० २५८ ॥ ९-१२ ॥ जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पाणो
पाए आमजावेज वा पमजावेज वा आ ० प ० सा ०, एवं तइयउदेसगमओ गेयत्ता जाव सीसदुवारियं, जे गामाणुगामं दुइजमाणे अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पाणो सीसदुवा-
रियं कारवेइ कार ० सा ० १३-६५ ॥ जे भिक्खू आगन्तारेसु वा जाव महागिहंसि वा उच्चारपासवणं परिट्टवेइ परिट्टवंतं वा सा ० २६८ ॥ ६६-७४ ॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियस्स वा
गारत्थियस्स वा असणं वा ० देइ देंतं वा सा ० ७५ ० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा ० ७६ ० वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा देइ देंतं वा सा ० ७७ ० पडिच्छइ
९५८ निशीथ छेदसूत्रं, उद्देशो - १५

अत्र उद्देशकः १५ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [१५] ----- मूलं [७८] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[७८]

दीप
अनुक्रम
[९८२]

पडिच्छंतं वा सा० १७८। जे भिक्खु पासत्थस्स असणं वा० देइ देंतं वा सा० पडिच्छति पडि० सा०, वत्थं वा जाव पायपुच्छणं वा देति देंतं वा सा० वत्थं वा पडिच्छइ प० सा० १७९-८२। एवं ओसन्नस्स १८३-८६। कुसीलस्स १८७-९०। नितियस्स १९१-९४। संसत्तस्स '३०४'। १५-९८। जे भिक्खु जायणावत्थं वा निमन्तणावत्थं वा अजाणिय अपु-
च्छिय अगवेसिय पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेन्तं वा साइजइ, से य वत्थे चउण्हं अन्नयेरं सिया तंजहा-निचनियंसणिए मज्जणिए छणुस्सविए रायदुवारिए '३९४'। ९९। जे भिक्खु वि-
भूसापडियाए अप्पणो पाए आमजेज वा पमजेज वा आ० प० साति०, एवं तइयउद्देशसगमेण जाव जे गामाणुगामं दुइजमाणे विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमजेज वा पमजेज
वा० सा० १००-१५२। १० वत्थं वा पडिग्गाहं वा कम्बलं वा पायपुच्छणं वा अन्नयं वा उवगणजायं धरेइ धरंतं वा सा० १५३। १० धोवइ धोवंतं वा सा० '३९८' तं सेवमाणे आव-
जइ चाउम्मासियं परिहारद्धानं उग्घाइयं १५४॥ पण्णरसमो उद्देशओ १५॥ जे भिक्खु सागारियं सेजं उवागच्छइ उ० सा० '१३३'। १। १० सउदगं सेजं अणुपविसइ अणुपविसंतं
वा सा० '२५६'। २। १० सागणियं से० '२९३'। ३। १० सचिंतं उच्छुं भुंजइ एवं पन्नरसमे उद्देशे अंबस्स जहा गमो सो चैव इहंपि णेयवो १४। १० विडसइ० १५। १० सचिंतं अन्तरुच्छुयं
वा उच्छुल्लंठियं वा उच्छुलोचोयं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ० १६। १० विडसइ० १७। १० सचिंतपइडियं उच्छुं भुंजइ०, विडसइ०, अंतरुच्छुयं० '२९६'। ८-११। १०
आरणमाणं वणवयाणं अटवीजत्तासंपट्टियाणं असणं वा० पडिग्गाहेइ पडि० सा० '३०३'। १२। १० वुसराइयं अक्सराइयं वयइ वयंतं वा सा० १३३। १० अवुस० वुस० '४७७'। १४। १०
वुसराइयाओ गणाओ अवुसराइयं गणं संकमइ संकमंतं वा सा० १५। १० वुग्गाहवकंताणं असणं वा० देइ देंतं वा सा० १६। १० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा० १७। १० एवं वत्थं वा
पडिग्गाहं वा कम्बलं वा पायपुच्छणं वा देइ देंतं वा सा० १८। १० पडिच्छइ पडि० सा० १९। १० एवं वसहिवि दोहिं गमएहिं, देह० २०। १० पडिच्छइ० २१। १० अणुपविसइ० २२। १०
सज्जायं देइ देंतं वा सा० १२३। १० सज्जायं पडिच्छइ पडि० सा० '४९६'। २४। १० विहं (अडविं) अणेगाहगमणिजं अभिसंयरेइ अभि० सा० '५८४'। २५। १० विरूवरूवाइं दस्सुगाययणाइं
अणारियाइं मिळक्खुइं पच्चित्तयाइं सति ळाडे विहाराए संयरणेसु संथरणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभि० '६१६'। २६। १० दुगुच्छियकुलेसु असणं वा० पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा
सा० २७। १० वत्थं वा पडिग्गाहं वा कम्बलं वा पायपुच्छणं वा० २८। १० वसहिं० २९। १० सज्जायं उदिसइ उदिसंतं वा सा० ३०। १० वाएइ वा० वा सा० ३१। १० पडिच्छइ पडि०
वा सा० ३२। १० असणं वा० पुडवीए निभिसवइ नि० वा सा० ३३। १० संथारए० ३४। १० वेहासे० '३२८'। ३५। १० अन्नउन्धीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं भुंजइ भुंजंतं वा सा० ३६। १०
आवेदियपरिवेदिए भुंजइ भु० वा सा० '६३८'। ३७। १० आयरियउवज्जायाणं सेजासंथारगं पाएणं संघट्टेत्ता हत्थेण अणुणुन्नेत्ता धारयमाणे गच्छइ गच्छंतं वा सा० '६४२'। ३८। १०
पमाणाइरिंतं वा गणणाइरिंतं वा उवहिं धरेइ धरंतं वा सा० '७४७'। ३९। १० अनन्तरहियाए पुडवीए चलाचले उचारपासवणं परिट्टवेइ परिट्टवंतं वा सा० (जाव खंधेसि०) '७४९'
तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारद्धानं उग्घाइयं ४०-५०॥ सोलसमो उद्देशओ १६॥ जे भिक्खु कोऊहउपडियाए अन्नयं तसपाणजायं तणपासएण वा जाव सुत्तपास-
एण वा बंधइ बंधंतं वा सा० १। १० बद्धेउगं वा मुयइ मुयंतं वा सा० २। १० तणमात्थियं वा जाव हरियमात्थियं वा पिणदइ० करेइ करंतं वा सा० धरेइ ध० वा० '८'। ३-५। १० अय-
त्तोहाणि जा जाव सुवण्णत्तोहाणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिमुञ्जइ प० सा० '१०'। ६-८। १० हाराणि वा जाव सुवण्णसुत्ताणि वा क० ध० परिमुञ्जइ
प० सा० '११'। ९-११। १० आइणाणि वा जाव आमरणविचिन्ताणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ ध० सा० परिमुञ्जइ प० सा० '१४'। १२-१४। १० निग्गन्धी निग्गन्थस्स पाए
अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आमजावेज वा एवं तनिओद्देशसगमेण णेयवं जाव जा निग्गन्धी निग्गन्थस्स गामाणुगामं दुइजमाणस्स अन्न० गार० सीसदुवारियं कारवेइ० १५-
६७। जे निग्गन्थे निग्गन्धीए पाए अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आमजिज वा जाव सा० एवं मणिगल्लगमयसरिसं णेयवं जाव निग्गन्धीए गामाणुगामं दुइजमाणिए अन्न०
गा० सीसदुवारियं कारवेइ० '२८'। ६८-१२०। जे निग्गन्थे निग्गन्थस्स सरिसगस्स सन्ते ओवासे अन्ते ओवासं न देइ नदंतं वा सा० १२१। १० जा निग्गन्धी निग्गन्धीए सरिसियाए
जाव साइजइ '४६'। १२२। जे भिक्खु मात्थोहइ असणं वा० देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा० १२३। १० कोट्टाउतं असणं वा० उक्कुजियं निकुजियं० १२४। १० मट्टिओत्थिंतं असणं
वा० उच्चिमिदियं मिच्चिमिदियं० '५५'। १२५। जे भिक्खु असणं वा० अन्नयं पुडवीपइडियं पडिग्गाहेइ० १२६। एवं आउप० १२७। १० तेषप० १२८। १० वणस्सइकायप० '६२'। १२९।
जे भिक्खु अचुसिणं असणं वा० सुप्पेण वा विहणेण वा ताल्लियण्णेण वा पत्तेण वा पत्तमङ्गेण वा साहाए वा साहाभङ्गेण वा पेहणेण वा पेहणहत्थेण वा चेलेण वा चेळकण्णेण वा
हत्थेण वा मूहेण वा फुमित्ता वा वीइत्ता वा आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा० १३०। १० असणं वा० उप्पिसुणं पडिग्गाहेइ प० सा० १३१। १० उस्सेयणं वा संसेयणं वा चाउलोदगं वा वारो-

९५९ निशीथं छेदसूत्रं उद्देशो १५

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः १७ आरब्धः

आगम
(३४)

“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं)

----- उद्देशः [१७] ----- मूलं [१३२] -----

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

प्रत
सूत्रांक
[१३२]
दीप
अनुक्रम
[१०३६]

दगं वा निशोदगं वा तुसोदगं वा जसोदगं वा भुसोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा अम्बकञ्जियं वा सुद्ववियडं वा अहुणाधोयं अणबिलं अपरिणयं अवकन्तजीवं अविद्वत्थं पडिग्गाहेइ प० सा० '७४'। १३२।० अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाई वागरेइ वागरंतं वा सा० '८४'। १३३।० गाएज्ज वा वाएज्ज वा नचेज्ज वा अभिणएज्ज वा ह्यहेसियं हत्थिगुल्लुगाइयं उक्कुट्ट-सिहनायं वा करेइ करंतं वा सा०। १३४।० भेरीसदाणि वा पडह० वा मुरव० वा सुईग० वा एवं नंदि० वा झरि० वा वल्लरि० वा डमरुग० वा मड्डय० वा सद्दुय० वा पएस० वा गोलुइ० वा अन्नयराणि वा नहपगाराणि वित्तयाणि सदाणि कणसोयपडियाए अभिसंयोरेइ अ० सा० बारसम उदेसगमेण गेयव०। १३५।० वीणासदाणि वा विपञ्चि० वा तूण० वा ववीसग० वा वीणाइय० तुंववीणा० वा झो(पो)डय० वा टंकुणस० वा अन्नयराणि वा तहपगाराणि वित्तयाणि सदाणि। १३६।० ताळसदाणि वा कंसताळ० वा लत्तिय० वा गोहिय० वा मकरिय० वा कच्छभि० वा महइ० वा सणाळिया० वा वाळिया० वा अन्नयराणि वा नहपगाराणि झुसिराणि०। १३७।० सेखसदाणि वा वंस० वा वेणु० वा खरमुहि० वा परिळि० वा वेचा० वा अन्नयराणि वा तहपगाराणि झुसिराणि० '९३'। १३८।० चप्पाणि वा फत्तिहाणि वा जाव इह(पर)ळोइएसु वा सदेसु जाव अज्झोववजेमाणं वा सा० '९४' तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारट्टाणं उग्घाइयं। १३९-१५१॥ सत्तरसमो उदेसओ १७॥ जे भिक्खु अणट्टाए नावं दुरुहइ दुरु० सा०। ११० नावं किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दि-ज्जमाणं दुरुहइ दुरुहंतं वा सा० एवं जो चोइसमे उदेसे परिग्गहगमो सो गेयवो जाव अच्छेज्ज, णवरं दुरुहत्ति भाणियव०। २-५।० थळाओ नावं जले ओकसावेइ ओ० सा०। ६।० जळाओ नावं थले उकसावेइ उक० सा०। ७।० पुण्णं नावं उस्सिज्जइ उ० सा०। ८।० सन्नं नावं उप्पिळावेइ उप्पि० सा०। ९।० पडिणावियं कट्टु नावाए दुरुहइ दु० सा०। १०।० उहडगामिणि वा नावं अहोगामिणि वा नावं दुरुहइ दु० सा०। ११।० जोयणवेळागामिणि वा अहजोयणवेळाग० वा नावं दु० सा०। १२।० नावं आकसावेइ ओकसावेइ खेवावेइ रज्जुणा वा कइडइ०। १३।० नावं आत्तिनएण वा पफिट्टएण वा वंसेण वा वळेण वा वाहेइ वा० सा०। १४।० नावाओ उदगं भायणेण वा पडिग्गहेण वा मत्तेण वा नावाउस्सिज्जणेण वा उस्सिज्जइ उ० सा०। १५।० नावं उत्तिगेण उदगं आसवमाणि उवक्खरिं कज्जलाणिं पेहाय हत्थेण वा पाएण वा आसन्थपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मट्ठियाए वा चेलरुण्णेण वा पडिपीहेइ प० सा०। १६।० नावागओ तावागयस्स असणं वा० पडिगाहेइ प० सा० '३०' एतेण गमेण गावागओ जलगतस्स णावागतो पंकगयस्स णावागतो थलगतस्स, एवं ज-ल्लगएणवि चत्तारि पंकगएणवि चत्तारि थल्लगएणवि चत्तारि गमा गेयवो। १७-३२।० वत्थं किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहइ प० सा०, एवं चोइसमे उदेसे पडिग्गहए जो गमो भणिओ सो चैव इहंपि वत्थेण गेयवो जाव वासावासं संवसइ संव० सा० नवरं णिक्कोरणं नत्थि '३१' तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारट्टाणं उग्घाइयं। ३३-८८॥ अट्टादसमो उदेसओ १८॥ जे भिक्खु वियडं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा०। १। एवं पामिच्चैति पामिच्चियमिति०। २।० परियट्ठति परियट्ठावेति परियट्ठियमिति०। ३।० अच्छेज्जं अनिसट्ठं अभिहडं०। ४। जे भिक्खु गिळाणस्सट्टाए परं तिण्हं वियडदत्तीणं पडिग्गाहेइ प० सा०। ५।० वियडं गहाय गामाणुगामं दूइज्जइ दू० सा०। ६।० वियडं गाळेइ गाळवेइ गाळियं० '२६'। ७।० चउहिं संझाहिं सज्झायं करेइ करंतं वा सा० तं० पुत्राए संझाए पच्छिमाए संझाए अवर(मज्झ)हे अहडरत्ते। ८।० कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पु० सा०। ९।० दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पु० सा० '३६'। १०।० चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करंतं वा सा० तं० इन्दमहे खंदमहे जन्वमहे भूयमहे। ११। चउसु महापाडिवएसु सज्झायं करेइ करंतं वा सा० तं० सुगिम्हियापाडिवए आसाटीपा० भववय(इन्दमह)पा० कत्ति-यापा०। १२।० पोरिसि सज्झायं उवाइणवेइ उवा० सा०। १३।० चाउक्काळं सज्झायं न करेइ नक० सा० '४६'। १४।० असज्झाए सज्झायं करेइ क० सा०। १५।० अप्पणो असज्झाए सज्झायं करेइ क० सा० '१५२'। १६।० हेड्डिळाई समोसरणाई अवाएत्ता उवरिडाई समोसरणाई वा० वा० वा सा०। १७।० नव बंभचेराई अवाएत्ता उवरिमसुयं वाएइ वा वा० सा० '१६९'। १८।० अवत्तं वाएइ वा० सा०। १९।० वत्तं न वाएइ नवा० सा०। २०।० अपत्तं वाएइ वा० सा०। २१।० पत्तं न वाएइ नवा० सा० '२१५'। २२। दोण्हंपि सरिसमाणं एकं संचिकखावेइ एकं न संचिकखावेइ एकं वाएइ एकं न वाएइ नवा० सा० '२२१'। २३।० आयरियउवज्झाएहि अविदिच्चं गिरं आइयइ आइ० सा०। २४।० अन्नउ-त्थियं वा गाररिथियं वा वाएइ वा० वा सा०। २५।० पडिच्छइ प० सा०। २६।० एवं पासत्थं। २७-२८। ओसन्नं। २९-३०। कुसीळं। ३१-३२। नितियं। ३३-३४। संसत्तं '२४३' तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारट्टाणं उग्घाइयं। ३५-३६॥ एगुणवीसइमो उदेसओ १९॥ जे भिक्खु मासियं परिहारट्टाणं पडिसेविता आळोएजा अपत्तिउंचियं आळो-एमाणस्स मासियं पत्तिउंचियं आळोएमाणस्स दोमासियं, एवं ववहारपट्टुदेसगमो गेयवो जाव दस गमा समत्ता एगत्तसो बहुत्तसोवि जाव सत्तमेवं सकयं एगओ साहणित्ता जाए य पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणए पडिसेविता सावि कसिणा तत्थेव आरुहेयवा सिया '३०९'। १-२२।० छम्मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्टाणं (२४०) ९६० निशीथं छेदसूत्र, उद्देशो-२०

www.dhammadownload.com

File Photo & Original 1/3/20

मुनि दीपरत्नसागर

www.dhammadownload.com

अत्र उद्देशकः २० आरब्धः

आगम (३४)	“निशीथ” - छेदसूत्र-१ (मूलं) ----- उद्देशः [२०] ----- मूलं [२३] -----
प्रत सूत्रांक [२३] दीप अनुक्रम [१३९०]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; background-color: #ffffcc;"> <p>पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्जावसाणे सअट्टं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं सवीसइराइया दो मासा।२३।० पञ्चमासियं० एवं चाउम्मासियं० एवं तेमासियं० एवं दोमासियं० मासियाविं० जाव सवीसइराइया दो मासा।२४-२८।० सवीसइराइयं दोमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० तेण परं दसराया तिण्णि मासा।२९।० सदसरायतेमासियं परिहारट्टाणं जाव तेण परं चत्तारि मासा।३०।० चाउम्मासियं परिहारट्टाणं जाव तेण परं सवीसइराइया चत्तारि मासा।३१।० सवीसइराइयं चाउम्मासियं परिहारट्टाणं जाव तेण परं सदसराया पञ्च मासा।३२।० सदसरायं पञ्चमासियं परिहारट्टाणं जाव तेण परं छम्मासा।३३।० छम्मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्जावसाणे सअट्टं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो।३४।० एवं पञ्चमासियं चाउम्मासियं तेमासियं दोमासियं मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० दिवड्ढो मासो।३५-३९।० दिवड्ढमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं० दो मासा।४०। दोमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० अइदाइजा, एवं एत्तो पक्खे २ आरोवेयवो जाव छम्मासा पुण्णत्ति।४१।० दोमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए जाव तेण परं अइदाइजा मासा।४१।० अइदाइजा मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० तिण्णि मासा।४२।० तेमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० अइदाइजा मासा।४३।० अइदाइजा मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० चत्तारि मासा।४४।० चाउम्मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० अइदाइजा मासा।४५।० अइदाइजा मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० पञ्च मासा।४६।० पञ्चमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० अइदाइजा मासा।४७।० अइदाइजा मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे० छम्मासा।४८।० दोमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेण परं अइदाइजा मासा।४९।० अइदाइजा मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा वीसइराइया आरोवणा० तेण परं सपञ्चराया तिण्णि मासा।५०। सपञ्चरायं तेमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेण परं सवीसइराइया तिण्णि मासा।५१। सवीसइराइयं तेमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा वीसइराइया आरोवणा० तेण परं सदसराया चत्तारि मासा।५२। सदसरायं चाउम्मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा पक्खिया आरोवणा० तेण परं पञ्चूणा पञ्च मासा।५३। पञ्चूणं पञ्चमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा वीसइराइया आरोवणा० तेण परं अइदाइजा मासा।५४। अइदाइजा मासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएजा अहावरा पक्खिया आरोवणा० तेण परं छम्मासा '३६९'।५५। उपसंहारः '४२५' ॥ श्रीसिद्धाचलोपेत्यकायां शिलोत्कीर्णसंकलागमे आगममंदिरे श्रीनिशीथच्छेदसूत्रं ?</p> </div>
	मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः (आगमसूत्र ३४) “निशीथ” परिसमाप्तः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

34

पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधितः संपादितश्च
“निशीथ-छेदसूत्र” [मूलं एव]

(किंचित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः

“निशीथ” मूल” नामेण

परिसमाप्तः

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'